शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी-मार्च 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विकसित भारत के निर्माण में साहित्य की भूमिका

डॉ.लोहारसिंह ब्राह्मणे (सहायक प्राध्यापक, हिन्दी)
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
शहीद चन्द्रशेखर आजाद शास. स्नात. महाविद्यालय
झाबुआ, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

विकसित भारत के निर्माण में साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। साहित्य मनुष्य के विचारों को दिशा देता है और समाज में जागरूकता, नैतिकता तथा मानवीय संवेदनाओं को मजबूत करता है। यह देश की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखते हुए आधुनिक विकास की राह भी दिखाता है। प्राचीन काल से लेकर आज तक साहित्य ने राष्ट्रहित में लोगों को प्रेरित किया है। भारतीय साहित्य केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं अपितु ज्ञान की संवाहक शक्ति भी रहा है। वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, पुराणों तथा नाट्यशास्त्र, कामसूत्र, अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों में निहित ज्ञान-धर्म, नीति, दर्शन, भौतिक विज्ञान, गणित, खगोल, आयुर्वेद, संगीत आदि के क्षेत्रों में साहित्य के माध्यम से जनमानस तक पहुँचा। संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, बंगला, उड़िया और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में यह परंपरा सतत रूप से विद्यमान रही है। आधुनिक युग में डिजिटल माध्यमों के कारण साहित्य की पहुँच और बढ़ गई है जिससे शिक्षा, समानता, विज्ञान और नवाचार की भावना को व्यापक आधार मिलता है। संक्षेप में साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, समाज का निर्माता भी है। विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए समृद्ध, जागरूक और सकारात्मक साहित्य की निरंतर आवश्यकता बनी रहती है। साहित्य वह माध्यम है जो लोगों में देश भक्ति, मानवीय मूल्य, एकता और प्रगति की भावना को जगाता है। यह समाज को सही दिशा देता है और नई पीढ़ी को जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देता है। इसलिए साहित्य को मजबूत बनाकर ही हम एक समृद्ध सशक्त और विकसित भारत का निर्माण कर सकते हैं।

प्रस्तावना

भारत आज विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केवल आर्थिकए वैज्ञानिक और तकनीकी विकास ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक उत्थान की भी आवश्यकता है। भारतीय साहित्य केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, अपितु ज्ञान की संवाहक शक्ति भी रहा है। वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, पुराणों तथा नाट्यशास्त्र, कामसूत्र, अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों में निहित ज्ञान-धर्म, नीति, दर्शन, भौतिक विज्ञान, गणित, खगोल, आयुर्वेद, संगीत आदि के क्षेत्रों में साहित्य के माध्यम से जनमानस तक पहुँचा। संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, बंगला, उड़िया और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में यह परंपरा सतत रूप से विद्यमान रही है। भक्ति साहित्य में ज्ञान और अनुभव का संयोग, सूफी

परंपरा में आत्म-चिंतन, संत साहित्य में लोक-आधारित बोध, यह सब भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध रूप हैं। इस उत्थान का सबसे सशक्त माध्यम है साहित्य। साहित्य मनुष्य के विचारों को दिशा देता है, उसके भीतर राष्ट्रीय चेतना, मानवीय संवेदनाएँ और सामाजिक जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न करता है। इसलिए विकसित भारत का आधार केवल उद्योग, तकनीक या विज्ञान नहीं, बल्कि समृद्ध और जीवंत साहित्य भी है, जो देश के वर्तमान को समझते हुए भविष्य के लिए दूरदृष्टि प्रदान करता है। साहित्य समाज के सपनों, संघर्षों और विकास की दिशा को शब्दों में ढालता है। आज भारत विकसित भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है और यह परिवर्तन साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आधुनिक साहित्य में न केवल वर्तमान समस्याएँ दर्ज हो रही हैं, बल्कि भविष्य के सशक्त, आत्मनिर्भर और प्रगतिशील भारत की तस्वीर भी उभरकर सामने आ रही है।

साहित्य समाज का मार्गदर्शक

साहित्य केवल शब्द नहीं होता, यह समाज की आत्मा होता है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और संत कवियों की रचनाओं ने हमेशा समाज को दिशा दी है। साहित्य ने लोगों में संस्कार, एकता, समानता, नैतिक मूल्यों और कर्तव्यों को मजबूत किया है। साहित्य समाज का दर्पण है यह कथन बिल्कुल सत्य है। जिस प्रकार दर्पण में हमारा चेहरा साफ दिखाई देता है, उसी प्रकार साहित्य में समाज का वास्तविक रूप झलकता है। साहित्य किसी युग के विचारों, भावनाओं, परंपराओं, संघर्षों और मूल्यों को शब्दों में पिरोकर अगली पीढ़ियों तक पहुँचाता है। हर युग का साहित्य उस समय के समाज की स्थितियों और सोच को दर्शाता है। प्राचीन काल के वेद-पुराणों में धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का चित्रण मिलता है। मध्यकालीन भक्ति साहित्य में सामाजिक एकता और भक्ति आंदोलन झलकता है। आधुनिक साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक समस्याएँ और जागरूकता दिखाई देती है। साहित्य लोगों में देशभक्ति, कर्तव्य भावना और मानवता को बढ़ाता है। यह समाज में एकता और सहयोग की भावना को मजबूत करता है। विकसित भारत के लिए सबसे जरूरी है जागरूक और शिक्षित नागरिक। साहित्य व्यक्ति को सोचनेए समझने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने की प्रेरणा देता है। इससे समाज में देशभक्ति, समानता और सहयोग की भावना बढ़ती है। जब देश तेज़ी से विकास की ओर बढ़ता है तो अपनी परंपरा और संस्कृति को संजोए रखना भी जरूरी होता है। साहित्य ही वह माध्यम है जो आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखता है।

जागरूक और संवेदनशील नागरिक

विकसित भारत का निर्माण तभी संभव है जब नागरिक शिक्षित, जिम्मेदार और जागरूक हों। साहित्य व्यक्ति के भीतर मानवीय मूल्यों और संवेदनशीलता को जगाता है। यह व्यक्ति को देश, समाज और संस्कृति से जोड़ता है। नवाचार और विकास के लिए प्रेरणा साहित्य नई सोच को जन्म देता है। यह युवाओं में देशभक्तिए कर्तव्य भावना और प्रेरणा भरता है। डिजिटल युग में साहित्य को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर विकास की राह को और मजबूत किया जा सकता है। डिजिटल युग में साहित्य को आधुनिक रूप में प्रस्तुत कर जन-जन तक पहुँचाया जा सकता है। विकास की दिशा में प्रेरक शक्ति साहित्य वैज्ञानिकए सामाजिक और सांस्कृतिक सोच को गहराई देता है। यह युवाओं को नई दिशा और

सही दृष्टिकोण प्रदान करता है। सांस्कृतिक एकता का आधार भारत विविधताओं से भरा देश है। साहित्य ही वह शक्ति है जो इन विविधताओं को एक सूत्र में पिरोता है। यह सभी भाषाओं और परंपराओं को जोड़कर राष्ट्र की एकता और अखंडता को सशक्त करता है।

साहित्य युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत

साहित्य मानव जीवन को प्रेरणा देने वाला शक्तिशाली माध्यम है। विभिन्न साहित्यिक विधाएँ कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि अपनी-अपनी शैली और अभिव्यक्ति के साथ समाज में सकारात्मक परिवर्तन और प्रेरणा का संचार करती है। साहित्य की प्रत्येक विधा मानव मन को उजाले की ओर ले जाती है, वह सामाजिक चेतना बढ़ाती है, सही मार्ग दिखाती है और व्यक्ति को निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। भारत का भविष्य युवा पीढ़ी के हाथों में है। साहित्य युवाओं में नई सोच, रचनात्मकता और जिम्मेदारी की भावना जगाता है। इससे वे राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं। विकसित भारत के लिए सांस्कृतिक आधार आर्थिक विकास को टिकाऊ बनाने के लिए संस्कारों और मूल्यों का होना जरूरी है। साहित्य ही वह माध्यम है जो इन मूल्यों को जीवित रखता है। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम 'विंग्स ऑफ़ फायर' में सपने देखने से व मेहनत से उन्हें पूरा करने, स्वामी विवेकानंद के विचारों से, आत्मविश्वास, युवा शक्ति का महत्व, प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक न्याय और नैतिकता, दिनकर 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'रश्मिरथी' साहस और राष्ट्रधर्म, भगत सिंह के लेख, क्रांतिकारी चेतना और देशभक्ति की भावनाओं से प्रेरित होकर युवाओं को सीख मिलती है।

निष्कर्ष

विकसित भारत का निर्माण केवल इमारतों और उद्योगों से नहीं होगाए बल्कि संवेदनशील और संस्कारी नागरिकों से होगा और ऐसे नागरिक साहित्य के प्रभाव से ही बनते हैं। इसलिए साहित्य को समाज का केंद्र बनाकर ही हम एक शक्तिशालीए समृद्ध और विकसित भारत की रचना कर सकते हैं। विकास की नींव तकनीक पर टिकी है, पर उसकी आत्मा साहित्य में बसती है। विकसित भारत का निर्माण केवल तकनीकी और आर्थिक प्रगति से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए एक संवेदनशील, संस्कारी और जागरूक समाज की भी आवश्यकता होती है। साहित्य वह माध्यम है जो लोगों में देशभक्ति, मानवीय मूल्य, एकता और प्रगति की भावना को जगाता है। यह समाज को सही दिशा देता है और नई पीढ़ी को जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देता है। इसलिए साहित्य को मजबूत बनाकर ही हम एक समृद्ध सशक्त और विकसित भारत का निर्माण कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 एस.रघुरामन, युवा भारत की नई पहचान, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली

2 मुंशी प्रेमचन्द गोदान उपन्यास, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली

3 बाबू गुलाब राय, हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा

4 डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, भारत 2020 और उसके बाद, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली

5 डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन दिल्ली

6 प्रो. सरोज शर्मा, भारतीय ज्ञान परंपरा विविध आयाम, शिप्रा पब्लिकेशन दिल्ली

7 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, किताबघर प्रकाशन दिल्ली